अंक–2

सितंबर, 2022

नया झरोखा

अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका

कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली

"नया झरोखा" पत्रिका के प्रथम अंक के विमोचन कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

अंक–2

नया झरोखा

सितंबर, 2022

कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) की अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका

संरक्षक एवं प्रेरणास्रोत

एस. किशोर, अध्यक्ष

मार्गदर्शक

अशोक कुमार, सदस्य
राजीव श्रीवास्तवा, सदस्य

संपादक मंडल

अशोक कुमार बवालिया
उप सचिव (प्रशासन/रा.भा)

राजेश तनेजा
उप निदेशक (रा.भा.)

मनीष मृणाल, अवर सचिव
(नी. एवं यो.–II)

संपादक

रेखा वधावन
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सहयोग

कृष्ण कुमार
वरि. अनुवाद अधिकारी

अरुण कुमार गुप्ता
वरि. अनुवाद अधिकारी

तसलीमा
कनि. अनुवाद अधिकारी

प्रकाशन

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
12, सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली

क्र. सं.	विषय/शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	दशम जलप्रपात का मनोरम दृश्य	प्रतिमा बड़ा	1–2
2	सहृदयता	राकेश कुमार	3
3	हिंदी हमारी शान	अशोक कुमार वर्मा	4
4	मां	तसलीमा	5
5	व्यथा	सुरभि सामरिया–चितलांगी	6
6	प्रशासन और कर्तव्यनिष्ठा	ओ पी तिवारी	7
7	मेरे सपनों की दुनिया	मुकुट सैकिया	8
8	दशम जलप्रपात	दविंदर	9
9	बिपिन रावत की आत्मकथा	दीपक कुमार सरकार	10
10	चलते–चलते	दुलाल चन्द्र सरकार	11
11	स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता	करण तनेजा	12–13
12	चित्रकारी	नवोनीता धारा	14
13	चित्रकारी	शरन्या प्रामाणिक	15
14	जीवन के लिए पर्यावरण: एक आवरण	प्रतिमा बड़ा	16–17
15	कनक भवन	महेश पासवान	18
16	स्वार्थी जीवन	सिया राम वर्मा	19
17	मासूम मुन्नी	अशोक कुमार वर्मा	20–21

(पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने है। कर्मचारी चयन आयोग का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमे उद्धृत आंकड़ों का संदर्भ अन्यत्र न करें।)

Azadi Ka Amrit Mahotsav

S. KISHORE, IAS
Chairman

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
Government of India
Staff Selection Commission
ब्लॉक सं. 12, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
Block No. 12, CGO Complex,
Lodhi Road, New Delhi-110003

संदेश

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि कर्मचारी चयन आयोग द्वारा ई–गृह पत्रिका "नया झरोखा" का दूसरा अंक प्रकाशित किया जा रहा है। कर्मचारी चयन आयोग एक भर्ती संस्था है और यह गौरव की बात है कि आयोग के अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्यालय संबंधी कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी राजभाषा हिंदी में लेखन कार्य करते हुए अपनी साहित्यिक क्षमता का परिचय दे रहे हैं।

जैसा कि मैंने पिछले अंक में कहा था कि कार्यालय पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती हैं, मुझे हर्ष है कि यह उद्देश्य अब तक काफी हद तक सफल रहा है। अपने इस लक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों की रचनाएँ शामिल करके अब इस पत्रिका के कलेवर को व्यापक बनाने का प्रयास किया गया है।

पत्रिका में छपी सभी रचनाओं के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को आयोग की ई–गृह पत्रिका 'नया झरोखा' के दूसरे अंक के प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

एस. किशोर

(एस. किशोर)

संपादकीय

प्रिय साथियों, पिछले अंक के अनुक्रम में आयोग की छमाही ई गृह–पत्रिका 'नया झरोखा' का नवीन अंक लेकर हम फिर आप सबसे संबोधित हैं।

हम सब इस तथ्य से भली–भांति परिचित हैं, न केवल परिचित ही हैं बल्कि इसे महसूस भी कर रहें हैं कि बदलते सामाजिक सरोकारों के कारण समाज का ढांचा तो बदल ही रहा है– इसके साथ ही लोगों का रहन–सहन, प्राथमिकताएं और सोच भी बदल रही हैं। परिवर्तन की गति अचानक ही बहुत तेज हो गई है। कोई भी नई वस्तु दो–चार दिन में ही पुरानी पड़ कर बेकार हो जाती है। इस तेज गति ने नव पदार्थवाद को जन्म दिया है। इलेक्ट्रॉनिक युग ने पठन–पाठन के शौक को कहीं बहुत पीछे धकेल दिया है। किताबों में गुलाब के फूल रखने के दिन लद गए। अब लैपटॉप की स्क्रीन से न तो कोई सुगंध आती है और न ही कोई पंखुड़ी झर कर कोई याद ताजा करती है। संवेदनाएं नए–नए तकनीकी रूपों को स्थानांतरित करती जा रही है।

एक बात और, हम एक ऐसी पीढ़ी का अवसान भी देख रहे हैं जिसने यह परिवर्तन देखा है। नया झरोखा के माध्यम से हमारा यह प्रयास है कि हम पुराने और नए के मध्य एक संवाद और संबंध स्थापित कर सकें। हमारे ही बीच के साथियों की ये रचनाएं आपको और हम सबको एक बार पुनः स्मरण कराएंगी कि परिवर्तन कितना भी तेज क्यों न हो, रचनाशीलता हर समय में, हर युग में और हर परिवेश में जीवित रही है और रहेगी। पत्रिका के प्रस्तुत अंक में 'जीवन के लिए पर्यावरण : एक आवरण' जैसे सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक लेख हैं वहीं दूसरी ओर एक मां की अपनी बेटी के प्रति भावनाओं का चित्रण करती कविता 'मां' भी है। पत्रिका में इसके अलावा 'स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता जैसे देशभक्ति की भावना को उजागर करते लेख हैं। निःसंदेह ये रचनाएं पाठकों को पसंद आएंगी।

हमें आशा है कि 'नया झरोखा' का यह अंक आपको नई रोशनी, नई और ताजा हवा का अनुभव कराएगा और सब में छिपी रचनाशीलता को जागृत करने की भूमिका निभाएगा।

रेखा वधावन
संपादक

दशम जलप्रपात का मनोरम दृश्य

झारखण्ड में अनेक रमणीय स्थल हैं। जब झारखण्ड के रमणीय स्थलों की चर्चा होती है तो जलप्रपातों की चर्चा स्वतः हो जाती है। झारखण्ड की राजधानी रांची से लगभग चालीस किलोमीटर दक्षिण की ओर स्थित दशम जलप्रपात स्थित है। रांची दौरे के दौरान दशम जलप्रपात घूमना अपने आप में एक अद्‌भुत अनुभव था। मैं अपने इसी अनुभव को आप सबसे बांटना चाहती हूं।

दशम जलप्रपात की हमारी रमणीय यात्रा रांची से शुरू हुई। हमारे साथ हमारे एक सहकर्मी थे जो रांची के ही निवासी हैं उनके बताए अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 33 या एनएच–33 पर रांची से तीस किलोमीटर दक्षिण की ओर जमशेदपुर से सौ किलोमीटर उत्तर की ओर एक गाँव है –तैमारा। तैमारा गांव से लगभग दस किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित है– दशम जलप्रपात। यहाँ से मात्र 25 किलोमीटर दूर बुंडू सबसे नजदीकी अनुमंडल है। रास्ते में रांची निवासी हमारे सहकर्मी हमें सारी जानकारी देते हुए जा रहे थे।पहले यह इलाका रांची जिले में ही था लेकिन वर्तमान में यह खूंटी जिले में आ गया है। कुछ दूर आगे निकलते ही मुख्य सड़क से अंदर की ओर जाते ही कुछ ग्रामीण बस्तियां मिलती हैं, फिर घने जंगल के बीच से गुजरती सड़क सीधे दशम फॉल ले जाती है। अगर जमशेदपुर के रास्ते चला जाए तो इस प्रपात से 38 किलोमीटर पहले ही तमाड़ नामक स्थान पर प्रसिद्ध दिउड़ी मंदिर है।

दशम जलप्रपात में बहुत ऊंचाई से पानी नीचे की ओर बहता है जो देखने में बहुत आकर्षक लगता है। स्वर्णरेखा की सहायक नदी कांची जब दक्षिणी छोटानागपुर पठार या राँची के पठारी हिस्से से बहती हुई लगभग 144 फीट की ऊंचाई से गिरती है तब इस दशम जलप्रपात का निर्माण होता है। पानी का तेज बहाव जब पत्थरों से टकराता है तो एक सुर, ताल और लय का संगम सुनाई पड़ता है जैसे कोई वादक धुन छेड़ रहा हो। यहां के प्राकृतिक दृश्य की छटा देखना कभी न भूलने वाला यादगार क्षण बन जाता है। झारखण्ड के पहाड़ों की लीला अगर देखनी हो तो यह जगह सर्वोत्तम है जो पहली नजर में सचमुच हिमालय की घाटियों जैसी ही लगती है। चारों तरफ जंगल ही जंगल हैं और झरने की घाटी काफी गहरी है। बरसात का समय होने के कारण यह भयावह रूप धारण किए हुए था और इसकी सुंदरता मन को मोह लेने वाली थी।

दरअसल दशम शब्द की उत्पत्ति स्थानीय मुंडारी शब्द "दा सोंग" से हुई है। मुंडारी भाषा में 'दा' का मतलब होता है पानी और 'सोंग' का मतलब है उड़ेलना। यानि 'पानी उड़ेलना'। प्रकृति द्वारा पानी उड़ेलने की घटना होने के कारण ही स्थानीय लोगों ने ऐसा नाम रखा होगा, और सच में ऐसा लगता है जैसे प्रकृति पानी उड़ेल रही हो।

हमने देखा दशम जलप्रपात का पानी लगभग साफ ही रहता है। पिकनिक के समय काफी भीड़ रहती है, लोग मस्ती करते, गाने बजाते और झूमते दिखते हैं। बरसाती नदी होने के कारण गर्मियों में कभी कभी यह प्रपात सूख भी जाता है। ऊंचाई से गिरती धारा के नीचे एक छोटा तालाब सा बन गया है जिसमें लोग जी भरकर नहाते है। लेकिन यह काफी खतरनाक भी है और दुर्घटनाओं के कारण अनेक मौतें भी हुई हैं। हाल ही में इसे विकसित कर नीचे तक जाने के लिए बड़ी–बड़ी सीढ़ियाँ बनायीं गयी हैं।

चट्टानों पर फिसलने से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए तारों के घेरे भी लगाये गए हैं। फिर भी इन चट्टानों पर बड़ी सावधानी से ही चलना पड़ता है।

चूँकि इस जलप्रपात से सबसे नजदीकी शहर रांची ही है, इसीलिए अगर आप अन्य राज्यों से आना चाहें तो पहले रांची ही आना अच्छा रहेगा। कोई निजी वाहन ही वहां तक जा पाएगा क्योंकि सार्वजनिक वाहन के लिए मार्ग बहुत संकरा है। पहाड़ों के बीच से हो कर जाना काफी रोमांचक लगता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे घने जंगलों के बीच पहाड़ों पर वो सुरमई स्थल आपका इंतजार कर रहा हो। दशम जलप्रपात भ्रमण निसंदेह एक अविस्मरणीय पल है।

– प्रतिमा बड़ा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
कर्मचारी चयन आयोग(पू.क्षे.)

सहृदयता

मनुष्य के जीवन में यदि सबसे मधुर कोई वस्तु है, तो वह है स्नेह, सद्भाव, आत्मीयता। एक दूसरे के प्रति जहां इस प्रकार की भावना रखी जाती है, वहां स्वर्ग का साक्षात्कार होता है। गरीबी और अभाव से ग्रस्त स्थिति में भी मनुष्य इन तत्वों के होने पर भारी संतोष और शांति का अनुभव करता है। इस तत्व को सुरक्षित रखने के लिए ही आध्यात्मिकता, धार्मिकता एवं आस्तिकता का सारा विधान बना हुआ है। दूसरों के प्रति स्नेह सद्भाव एवं आत्मीयता बनी रहे एवं बढ़ती रहे, इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य दूसरों के शरीर में भी अपनी ही आत्मा को देखें। उनके सुख दुख को भी अपना ही सुख दुख मानें। जिस प्रकार अपने बाल बच्चे एवं परिजन अपने लगते हैं, वैसे ही और लोग भी अपने लगें, तो उनसे सहज ही स्नेह उत्पन्न होगा। जिसके प्रति सच्चा स्नेह होता है, उसके साथ कुछ नेकी भलाई उदारता का परिचय देने की इच्छा स्वभावतः होती है। नवजात शिशु के पेट में कोई गड़बड़ी उत्पन्न हो जाए, इस भय से माता अपनी जिह्वा पर काबू रखकर अपना आहार चलाती है। स्वाद की उपेक्षा करके बालक के स्वास्थ्य का ध्यान रखती है। यही मातृ बुद्धि जब सारे समाज के प्रति होने लगती है, तो मनुष्य स्वभावतः संयमी और संतोषी हो जाता है। माता अपनी सुविधा तथा साधनों में कमी करके अपने बालकों के लिए खुशी खुशी अधिकाधिक साधन सामग्री जुटाती है और उस प्रयत्न में उसे जो त्याग करना पड़ता है, अभाव भोगना पड़ता है, उससे खिन्न होना तो दूर उलटे अधिक प्रसन्नता अनुभव करती है। यह त्याग, दान, परमार्थ, पुण्य, उदारता व सेवा का सिद्धांत है। आत्म भाव के विस्तार से ही संयम, त्याग, स्नेह तथा सेवा भावना की वृद्धि होती है। एक दूसरे के प्रति प्यार करें, सद्भाव एवं सहृदयता का व्यवहार करें, न्यायोचित मार्ग से जितनी साधन सामग्री जुट सके, उसी में संतोष करें तो संसार में मानसिक उलझन जैसी कोई समस्या शेष नहीं रह जाती। मन प्रसन्न रहे, उद्योगों से छुटकारा प्राप्त किया जा सके, तो जीवन यापन सरल, सुविधाजनक एवं शांतिपूर्ण हो सकता है। आज लोगों के सामने अनेक समस्याएं मौजूद हैं। सुलझाने के लिए अनेक प्रयत्न किए जाते रहे है पर गुत्थी सुलझाने को कौन कहे, उलटे उलझती जाती है। स्वास्थ्य की समस्या सामने है। उसे सुलझाने के लिए चिकित्सक, चिकित्सालय तथा औषधि निर्माण को बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है पर इसका मूल कारण असंयम है जिस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

राकेश कुमार
अवर सचिव
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

''हिन्दी हमारी शान''

हिन्दी भारत माता की आन है
हिन्दी से बढ़ती हमारी शान है
जन गण मन की अभिलाषा है
देश की सबसे प्यारी भाषा है।

देश की अभिव्यक्ति की शक्ति
जन जन की वाणी है हिन्दी
जिसने पूरे देश को जोड़ रखा है
दुनिया ने जिसका स्वाद चखा है।

देशी भाषाएं नदियों की धाराएं हैं
विशाल सागर संगम है हिन्दी
तो फिर देश की ऊंची शान करें
क्यों ना हम हिन्दी में काम करें।

शब्दकोष की कोई कमी नहीं
बस सोई इच्छाओं को जगाना है
अब हम सबको मिलजुलकर
हिन्दी को विश्व भाषा बनाना है।

डॉ. अशोक कुमार वर्मा
नामांकन अनुभाग
कर्मचारी चयन आयोग, रायपुर

मां

वो हर दुख सहती है
तू मेरी अफसर बेटी है, यह कहती है,
अपने मन में सारी तकलीफों को दबाकर
सारी खुशियां हमें देती है,
मैं कहती हूँ क्या मैं अफसर बन पाऊंगी ?
वो हिम्मत मुझे देती है,
वो कमजोर हो जाती है अंदर से कभी
पर मुझे मजबूती देती है,
वो ख्याल रखती है हर वक्त सबका
चाहे खुद बीमार रहती है,
दुनिया धूप तो वो छाँव है,
वो मेरे हौंसलों का जरिया है
वो मेरी प्यारी माँ है..वो मेरी प्यारी माँ है।

–तसलीमा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

व्यथा

इस दफा जाते हुए माँ बोली– बेटा ध्यान रखना,
ख्याल से रहना, आवाज ना उठाना, हर वक्त हर लम्हा नजर झुकाना,
उसकी आँखों में चिंता थी,
उसके लबों पर एक पीड़ा थी,
उसकी नजरों से मै छलछला गयी,
उन शब्दों से हादसों की जलजला आ गयी,
अब क्या कहूँ माँ–क्या सहती हूँ हर पल,
खुद से नफरत करवाता है हर एक चलता कल,
बरबस मन में मेरे ये सवाल कौंध आया है,
क्यों इस जनम मैंने नारी देह को पाया है,
इस समाज में उभरी ये कैसी इसकी माया है,
क्षण प्रतिक्षण इसके दोगलेपन ने मुझे सताया है,
अब क्या कहूँ माँ–ये कैसी विषाक्त काया है,
इससे जर्जर मन को मैंने मुस्कान में अपनी छुपाया है,
तू नहीं जानती कैसे मैं संभल पग पग चलती हूँ,
इज्जत आबरू की खातिर कितने डरों में पलती हूँ,
तुझे ना झुकानी पड़े नजरे खुद को इसलिए भरती हूँ,
तू एक मौत कहती है– मैं ना जाने कितनी मौते हर रोज मरती हूँ,
अब क्या कहु माँ हर उंगली से मैं कितना डरती हूँ,
आवाज तो छोड़ मैं भौहें भी नहीं उठाती हूँ,
मर रही आत्मा का अंश मैं हर रोज मिटाती हूँ,
कोई नजर कोई हाथ रोज मुझे कितना ही नोचता है,
पर इस परिवार की खातिर मेरा चेहरा ना मोंचता है,
मेरे बदन पर हर रोज नजरों की कितनी छुरियाँ चल जाती हैं,
अब क्या कहूँ माँ–इतना कुछ कहाँ कोई पाँती कह पाती है,
तू कहती है चुप रह तो ले मैं चुप रह लेती हूँ,
इस भीरु समाज से नहीं तो खुद से ही रोज लड़ लेती हूँ,
मन के एक कोने मैं माँ पर चिंगारी सुलगाती हूँ,
अंतर्मन के घावों से मैं तड़प तड़प कुलबुलाती हूँ,
पंख तो दे दिए तूने पर आसमां कहाँ खाली है,
काश पंजे दिए होते इस गुडिया को जो तूने पाली है,
ये मूक बधिर समाज की रीत कितनी कटु निराली है,
मेरे अस्तित्व का नाश कर रही ये रात बड़ी ही काली है,
पर माँ ये चीत्कार है– ये संसार डरा चिल्लाएगा,
जब जीती हुई कब्र पर मेरी वो खुदा अश्रु बरसाएगा,वो खुदा अश्रु बरसाएगा।।।

सुरभि सामरिया चितलांगी
सहायक अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (पश्चिमी क्षेत्र)

प्रशासन और कर्तव्यनिष्ठा

आज संविधान के स्वरूप से प्रशासन की गति से कर्मचारियों की कर्तव्यनिष्ठा पर असंतोष जगजाहिर है। उत्साह से किए गए कार्यों का विश्लेषण किया और पाया कि व्यवहारिकता को जीवन का आधार बनाना सबके लिए आवश्यक है। प्रतिभा को तिलांजलि देती व्यवस्था का ज्ञानवर्धन करना आवश्यक है। नियमों की अवहेलना प्रासंगिक बना जो कार्य किए गए हैं और रूढ़िवादिता से किए जा रहे हैं यह तर्कसंगत है। कर्मचारी का कार्यकाल सीमाओं से नियमबद्ध रहें यह प्रशासन की रूपरेखा में है। यदि कार्यों की समीक्षा हो तो व्यक्तित्व कहीं नहीं ठहरता। संविधान के अनुच्छेद 357 तथा धाराकुल 511 में व्यवस्था का संचालन है। सिविल पैनल कोर्ट में कृत्यों पर हर्जाना/जुर्माना का पूरा प्रावधान है। इंडियन पैनल कोर्ट (IPC) धाराओं को जब विधिक सी आर पी सी में देखा जाता है तब कर्मचारी की विधिवत कार्य प्रणाली को अनेक अवसरों पर असंतोषजनक पाया जाता है।

यह मानना तर्कसंगत है कि संविधान में सभी नागरिकों/सरकारी कर्मचारियों के लिए मूलभूत अधिकारों का प्रावधान है। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कोई कर्मचारी न्यायालय जा सके, यह अधिकार भी संविधान हमें प्रदान करता है। आज जरूरत है भारत निर्माण की। 76 साल बाद भी आजादी घर–घर नहीं पहुंची इसके लिए हमें कर्तव्यों की समीक्षा कर जिम्मेदारी लेनी होगी फाउंडेशन के लिए कॉमन खर्चे व्यक्ति विशेष की जरूरतों पर ध्यानाकर्षित करना ही होगा। भूख और गरीबी किसी धर्म या जाति की मित्र नहीं होती है। सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास ही भारत निर्माण का आधार है।

ओ.पी. तिवारी
ई. डब्ल्यू. ए
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

मेरे सपनों की दुनिया

चलो हम ऐसी एक दुनिया बनाए,
जहां नफरत की कोई जगह न हो,
जहां प्यार ही प्यार हो दिलों में,
हर जुबां पर मिठास ही मिठास हो,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए,
जहां हर आंखो में एक उम्मीद हो,
सपनों को साकार करने का जुनून हो,
सबके होंसले आसमान से भी ऊँचे और बुलंद हो,
जहां एक उम्मीद जीने का सहारा बन जाए,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए,
एक दूसरे की सफलता देख कर जहां जलन ना हो,
माँ बाप की सेवा बढ़कर कोई धर्म और मजहब ना हो,
जहां हर रिश्ता अटूट हो जाए,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए,
जहां जिद हो कुछ पाने की, दिलों में कुछ कर गुजरने की,
हम तैयार हो हर वक्त संभालने की,
हमारे दुआ किसी के लिए मरहम बन जाए,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए,
बेटी के जन्म पर जहां दोष ना हो,
माँ बहनों की आजादी पर कोई रोक ना हो,

कभी किसी का मजबूरी को दाँव ना लगाएं,
किसी की भावनाओं को हम कभी ठेस ना पहंचाए,
दूसरों की तकलीफ को हम गले से लगाएं,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए,
मेरा ये है सपना,
हर सपने की साकार में आपकी जरूरत है,
चलिए हम सब एकजुट हो जाएं,
आओ चलो हम एक ऐसी दुनिया बनाए।

– श्री मुकुट सैकिया
अवर सचिव,क.च.आ.(उ.पू.क्षे.)

दशम जलप्रपात

दशम जलाभिषेक है प्रकृति के हृदय का
जिस पर अर्पित है उगते सूरज सी लाखों भावनाएं !
जीवन के पठार सी निराशा में भी
सीचंती है आशाएं, प्यार और जीवंता !
सुंदर साल की हरियाली में
सूर्य की स्वर्ण किरणों का हार पहने !
बहकती इठलाती पहाड़ों से उतरती
जीवन समर में साहस का संचार करती !
शाश्वत आनंद और निर्मलता लिए
चोटियों से उतर आती है अंतस में !
युगों युगों से दशम की शीतल धारा
हरती दुख शोक व्यक्त अव्यक्त सारा !

*** ***

– दविंदर
कर्मचारी चयन आयोग,
पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

बिपिन रावत की आत्मकथा

(प्रतिरक्षा प्रधान बिपिन रावत सहित 13 शहीदों की स्मृति में समर्पण)

आज आपके आत्मविश्वास को एक झटका,
एक धार्मिक विश्वास में अविश्वास थोपना,
एक विराम और एक ठहराव,
एक चेतावनी के संकेत के बिना,

एक विनाश की कलेपन के संकेत के बिना,
एक युद्ध की तैयारी के बिना,
एक विरोध करने वाली आवाज की दहाड़ के बिना,
हमारी मौत उस भूरे बादल की गोद में।

मैं कितनी बार इस बादल में सोया हूँ,
उसके आँचल के स्पर्श से शरीर कितनी बार कांप चुका है,
मैं तुम्हें युद्ध के मैदान से देखना चाहता था,
देखो, आज उस बादल की गोद में हम दोनों एक साथ!

एक लंबे युद्ध के मैदान में शहीद होने की बड़ी इच्छा थी,
देशवासियों के विश्वास में कोई परछाई न पड़े,
मैं एक सौ चालीस करोड़ लोगों के दिलों में जीना चाहता था,
मैं गोलियों की रोशनी और गोलियों की आवाज के बीच मरना चाहता था,

मैंने इस सन्नाटे में मरना नहीं चाहा
आखिरी शब्द जो धड़क रहा है मेरे सीने में
उसे निकलवाकर बोलो – 'जय हिंद' 'जय हिंद' 'जय हिंद'!

*** ***

– दीपक कुमार सरकार
सहायक अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (पूर्व क्षेत्र)

चलते चलते

मैं काम के लिए शहर में घूमता रहा
कुछ दूर में कुछ आदमी शोर मचा रहे थे
कदम कदम वहाँ जा कर देखा एक जर्जर आदमी गिर पड़ा
और सब लोगों में बातचीत होने लगी
क्या जाने यह आदमी कहाँ से आया, क्या हुआ ?
कोई बोलने लगा लेट होने से लेट मार्क हो जाएगा
ऐसी बाते होने के बाद सभी आदमी उसे छोड़ अपने–अपने काम में चले गए,
मैंने भी ऐसा ही किया !

कुछ दिन बाद अपने मफस्सल शहर में अपने परिवार के साथ
में किताब मेला में जा रहा था
पिछले दिन की तरह फिर वही शोर मच रहा था,
कुछ दूर में एक आदमी बस से गिर कर घायल हो पड़ा
कोई बोलने लगा बस को आग लगा दो, कोई बोले उसे डॉक्टर के पास ले चलो
फिर कोई बोला पुलिस के मामले में फस जाएंगे
तुरंत आसपास साफ हो गया !

आज मेरा बहुत खुशी का दिन, बच्चे का बर्थ डे,
कोई अच्छी गिफ्ट खरीदने के लिए बड़े शहर में आया
अचानक ये क्या हुआ? मेरी धड़कन, मेरा पाँव, मेरे हाथ... ये क्या?
कुछ समझ नहीं पाए !
कोई है मुझे मदद करने वाले, कोई साथी.. कोई बंधु,
मुझे बचाओ.... जोर से बोलने की कोशिश करता,
लेकिन आवाज सबके पास नहीं पहुंचा
आँख से दीया जलाकर सबको ढूंढ रहा
दीया का धूप नहीं लगता !

सब लोग देखे फिर चले गए अपने काम में,
भाई थोड़ा सा पानी, कम से कम एक बूंद पानी,
कोई नहीं एक भी नहीं......!

*** ***

– श्री दुलाल चन्द्र सरकार
कर्मचारी चयन आयोग (पू.क्षे.)

स्वतंत्र भारत @ 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता।

आज हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे कर चुके हैं। विश्व में हमारी अलग पहचान है। कोरोना वायरस जैसी भयंकर आपदा से निबटने के लिए भारत ने किसी दूसरे देश के आगे हाथ नहीं पसारे। अपने ही देश में वैक्सीन, मास्क और पीपी ई किट बनाकर भारत ने पूरे विश्व को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया। लेकिन यह वास्तविकता है कि हम आत्मनिर्भर तभी हो सकते हैं जब हम सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलें। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारत की स्टार्ट–अप योजना है जिसका क्रियान्वयन पूरी ईमानदारी और निष्ठा से किया गया और आज उसी का परिणाम है कि इस योजना से हजारों बेरोजगारों को रोजगार मिल पाया है। अर्थात आत्मनिर्भरता के लिए सत्यनिष्ठा नितांत आवश्यक घटक है।

अंग्रेजों ने भारत पर सालों तक हुकूमत की, लेकिन जरा सोचिए लंबे समय तक किसी की गुलामी सहने के बाद, हमारे लिए उस आजादी के क्या मायने होंगे। असल में देखा जाए तो भारत के लिए 15 अगस्त एक तारीख नहीं है बल्कि उसके लिए आजादी के जश्न का दिन है। देश की आजादी के लिए वीर सपूतों ने अपनी जान की परवाह किए बिना अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। उन्होंने तब तक चैन नहीं लिया जब तक देश आजाद नहीं हो गया। देश की आजादी के लिए वीर सपूतों को जेलों में रहना पड़ा और अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़ी थी। भारत आज अपनी आजादी का 75वां पर्व मना रहा है जिसे आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। आजादी का यह अमृत महोत्सव 75 सप्ताह तक चलेगा।

इतनी जद्दोजहद के बाद मिली आजादी हमारे लिए कितनी बेशकीमती और महत्वपूर्ण है इसकी कल्पना करना भी कठिन है। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ, गुलामी की बेड़ियां टूटी और हम स्वयं के भाग्य–विधाता बने। लेकिन क्या यह अपने आप मे पर्याप्त है ? अपने भाग्य–विधाता बने हैं तो आगे की डगर तो हमें खुद तलाशनी है। 150 करोड़ की आबादी वाले हमारे देश की जन आकांक्षाओं को पूरा करना भी तो हमारा और हमारे देश की सरकार का दायित्व है न। लेकिन यह आकांक्षाएं पूरी होंगी कैसे?तो इसका उत्तर है जब हम आत्मनिर्भर बनेंगे। यहां मुझे प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र की पंक्तियां याद आती हैं जो उन्होंने सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता के लिए लिखी थी :–

"ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में मनुज नहीं लाया है
अपना सुख उसने अपने भुजबल से ही पाया है
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है कभी भाग्य के बल से
सदा हारती वह मन के . . . ."

असल में "आत्मनिर्भर भारत" भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने संबंधी एक दृष्टि या एक संकल्पना है। इसका पहली बार सार्वजनिक उल्लेख उन्होनें 12 मई 2020 को किया था जब वे कोरोना– वायरस विश्व महामारी संबंधी एक आर्थिक पैकेज की घोषणा कर रहे थे। आशा की जा रही है कि यह अभियान कोविड–19 महामारी संकट से लड़ने में निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका

निभाएगा। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा था कि "अब एक नई प्राणशक्ति, नई संकल्प शक्ति के साथ हमें आगे बढ़ना है। इस संबंध में 75 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर उन्होंने किसानों, महिलाओं और युवाओं के लिए देश को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से कई घोषणाएं भी की है।

200 सालों की गुलामी के बाद मिली आजादी के बाद भी अभी हम अशिक्षा, बेरोजगारी, अज्ञानता, महंगाई जैसी परेशानियों से जूझ रहे हैं तो इसका निदान का एकमात्र रास्ता है – सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता। इस अभियान का अर्थ और उद्देश्य विदेशों से भारत में आने वाली वस्तुओं पर अपनी निर्भरता कम करना और भारत में बनी वस्तुओं का उपयोग करना है। परंतु चाहे रक्षा का क्षेत्र हो या आम उपभोग की वस्तुएं– इनकी गुणवत्ता में इतना सुधार करना है कि हम स्वयं भी इनका उपयोग करें और दूसरे देश भी। लेकिन गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद तभी बन पाएंगे जब इसके लिए ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से प्रयास हों। बात चाहें सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की हो या निजी क्षेत्र के संस्थानों की, उसमें कार्यरत बड़े से बड़े अधिकारी या छोटे कर्मचारी को सत्यनिष्ठा या ईमानदारी से गंभीर प्रयास करने होंगे। आज के समय मे भ्रष्टाचार ने हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था को खोखला कर दिया है। इस पर समूचे रूप से अंकुश लगाने की जरूरत है। हमें सत्यनिष्ठा या ईमानदारी के रास्ते से ही आत्मनिर्भर (वोकल फॉर लोकल) के पथ पर सफलता मिल सकती है। अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना, तभी बेहतर हो सकती है, जब उसमें कार्यरत कार्मिक सत्यनिष्ठा से अपने दायित्वों को पूरा करें।

उपंसहार : प्रधानमंत्री ने 'वसुधैव कुटुंबकम' कहकर पूरे विश्व और भारत के नागरिकों के लिए भी यह संदेश दिया है कि भारत अपनी उन्नति में सभी को साथ लेकर चलना चाहता है। दूसरे देश भी हमारे उत्पादों की ओर तभी आकर्षित होंगे जब वे गुणवत्तापूर्ण होंगी और यह तभी संभव है जब वे सत्यनिष्ठा या ईमानदारी की भावना से परिपूर्ण हों।

– करण तनेजा,
सुपुत्र श्री राजेश तनेजा, उ.नि (रा.भा.)
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

सुश्री नवोनिता धारा
सुपुत्री – श्रीमती श्यामा धारा, सहायक अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (पूर्वी क्षेत्र)

सुश्री शरण्या प्रामाणिक,
सुपुत्री – श्री संजय प्रामाणिक, सहायक निदेशक
कर्मचारी चयन आयोग (पूर्वी क्षेत्र)

जीवन के लिए पर्यावरण : एक आवरण

पर्यावरण का अर्थ है एक ऐसा परिवेश जहां हम रहते हैं, सांस लेते हैं। पर्यावरण शब्द में सभी जैविक और अजैविक वस्तुएं शामिल हैं जो हमारे आसपास मौजूद हैं। यह हवा, पानी, भोजन और भूमि जैसी मूलभूत आवश्यकताएं प्रदान करता है जो जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है परि+आवरण अर्थात हमारे चारों ओर का वातावरण। हमारे सौर मंडल के ग्रहों में पृथ्वी की ही एकमात्र विशिष्टता यह है कि इस पर जीवन की सभी संभावनाओं को संभव बनाने के लिए वायुमंडल उपस्थित है। पृथ्वी पर पर्यावरण के बिना जीवन असंभव है।

पर्यावरण के प्रति मानव समुदाय को संवेदनशील बनाने और पर्यावरण के संरक्षण के लिए हम प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हैं। पृथ्वी पर मौजूद सभी सजीव और निर्जीव जगत पर्यावरण का हिस्सा हैं। हमारे पर्यावरण में पौधे, जीव, जल, वायु और अन्य जिनमें जीवन है सब मिल कर पर्यावरण कहलाते हैं। मनुष्य और जानवरों का जीवन पूरी तरह से जलवायु पर निर्भर है। हमारा पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन का आधार है, बल्कि कहना चाहिए कि पर्यावरण जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। हम सांस लेते हैं और जो ऊर्जा महसूस करते हैं, वह पर्यावरण से ही प्राप्त करते हैं। पर्यावरण को एक आवरण माना जाता है जो पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में मदद करता है। सभी ग्रहों में हमारा ग्रह पृथ्वी ही है जहां जीवन है।

पर्यावरण का महत्व

हर रोज न केवल हमें पर्यावरण के लिए हो रहे खतरों के बारे में सुनने को मिलता है बल्कि हम प्रतिदिन उन्हें अनुभव भी करते हैं। हमारे पर्यावरण में जंगलों से लेकर महासागरों तक सब कुछ शामिल है जो हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। तेजी से हो रहे वनों की कटाई, प्रदूषण, मिट्टी का कटाव आदि पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं जिसके बारे में गंभीरता से विचार करने और इनसे हो रही समस्याओं के समाधान करने की आवश्यकता है।

मानव जाति की आजीविका पर्यावरण पर निर्भर करती है। अरबों लोग अपनी आजीविका के लिए पर्यावरण पर आश्रित हैं। उदाहरण के लिए भोजन, दवा, आश्रय और बहुत कुछ के लिए जंगलों पर निर्भर है। फसल खराब होने पर किसान भी जीविकोपार्जन के लिए जंगल की ओर रुख करते हैं और जंगल पर्यावरण का हिस्सा है।

जैव विविधता के नुकसान के कारण कई नकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। जिस रफ्तार से हम पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। इस प्रकार, हम अपने जीव जंतुओं और पौधों की विभिन्न प्रजातियों को भी खोते जा रहे हैं। अतः पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए हमें अपने महासागरों और जंगलों की रक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

पर्यावरण असंतुलन कई बीमारियों को भी न्योता देता है जैसा कि हम सबको मालूम है कि कोविड–19 एक जूनोटिक बीमारी होने की सबसे अधिक संभावना है। जब मनुष्य पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करता है और ऐसा करके वह पर्यावरण के विरुद्ध कुछ ऐसी प्रक्रियाएं कर देता है जिसके कारण बीमारियां और संक्रमण फैलने लगते हैं। पर्यावरण संबंधी शोध के अनुसार लगभग 60% मानव संक्रमण जानवरों से उत्पन्न होते हैं। बर्ड फ्लू और स्वाइन फ्लू भी जानवरों से जुड़ी ऐसी ही बीमारियां हैं।

प्रदूषण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और हर साल लाखों लोग प्रदूषण के कारण काल–कवलित होते हैं। प्रदूषित हवा और पानी हमारे स्वास्थ्य और जीवन को प्रभावित करती है, जिसमें व्यवहार संबंधी समस्याएं

विकास में देरी और अल्जाइमर और पार्किंसन्स जैसी बीमारियां शामिल हैं। पेड़ पौधे ऑक्सीजन छोड़ते समय कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड जैसे वायु प्रदूषक को हटाने के लिए एक फिल्टर के रूप में काम करते हैं।

पर्यावरण से लाभ :

पर्यावरण जीवन से संबंधित क्रियाकलापों को नियमित करता है क्योंकि यह पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण प्रणालियों को विनियमित करने में मदद करते हैं। यह पृथ्वी पर संस्कृति और जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने में भी मदद करता है। पर्यावरण प्रतिदिन होने वाले प्राकृतिक चक्र को नियंत्रित करता है और यह प्राकृतिक चक्र जीवन और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखता है। यदि इस प्राकृतिक चक्र को बाधित करते हैं तो, अंततः मनुष्य और अन्य प्राणियों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा। हजारों वर्षों से पर्यावरण ने मनुष्य जानवरों और पौधों को फलने फूलने और बढ़ने में मदद की है। यह हमें उपजाऊ भूमि, वायु, पशुधन, पानी और जीवन के लिए जो भी आवश्यक वस्तुएं हैं, सब प्रदान करता है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण :

मानवीय गतिविधियां पर्यावरण के क्षरण का प्राथमिक कारण है क्योंकि अधिकांश मनुष्य किसी न किसी तरह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। मनुष्य के जो कृत्य पारिस्थितिक क्षरण का कारण बनती हैं वे हैं : प्रदूषण, दोषपूर्ण पर्यावरण नीतियां, रासायनिक पदार्थ, ग्रीन हाउस गैसें, ग्लोबल वार्मिंग आदि। औद्योगिक क्रांति और जनसंख्या विस्फोट के कारण पर्यावरण संसाधनों की मांग बढ़ी है, परंतु उन संसाधनों के अति प्रयोग और दुरुपयोग के कारण उनकी आपूर्ति सीमित हो गई है। नवीकरणीय एवं गैर नवीकरणीय संसाधनों के व्यापक और तीव्र उपयोग के कारण महत्वपूर्ण संसाधन जैसे समाप्त होते जा रहे हैं। संसाधनों के समाप्त होने और तेजी से बढ़ती जनसंख्या दवाब के कारण पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पर्यावरण में फैलाया जा रहा जैविक और अजैविक अपशिष्ट पर्यावरण के अवशोषित करने की क्षमता से कहीं अधिक है। इसलिए इस विकसित दुनिया के विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरुप उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण अंततः जल और वायु की गुणवत्ता को नुकसान पहुंचा रहा है। इससे वायु और जल जनित बीमारियों के मामले भी बढ़ रहे हैं।

इस प्रकार, उपरोक्त सभी बातों पर यदि हम गंभीरता से विचार करें तो हम कह सकते हैं कि यह पर्यावरण ही है जो हमें जीवित रख रहा है। पर्यावरण के बिना पृथ्वी में जीवन असंभव है। पर्यावरण जीवन के लिए एक आवरण की तरह है। जीवन को बनाए रखने में पर्यावरण के योगदान को कभी चुकाया नहीं जा सकता है। अतः पर्यावरण सुरक्षा एवं संतुलन की जिम्मेदारी हम में से प्रत्येक जन की है और हमें इस जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाने का प्रयास करना चाहिए तभी पर्यावरण सुरक्षित हो सकेगा।

पर्यावरण की सुरक्षा में ही जीवन की सुरक्षा है।

*** *** ***

सुश्री प्रतिमा बड़ा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
कर्मचारी चयन आयोग, पूर्वी क्षेत्र

कनक भवन

वो बेटी, जो एक बड़ी उम्र तक घर के बाहर शौच जाने के लिए अभिशप्त थी..
अब वो भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो लड़की, जो पढ़ना सिर्फ इसलिए चाहती थी कि परिवार के लिए रोटी कमा सके..
वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जो बिना वेतन के शिक्षक के तौर पर काम कर रही थी..
वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जिसे जब ये लगा कि पढ़ने–लिखने के बाद आदिवासी महिलाएं उससे थोड़ा दूर हो गई हैं तो वो खुद सबके घर जा कर 'खाने को दे' कह के बैठने लगीं.. वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जिसने अपने पति और दो बेटों की मौत के दर्द को झेला और आखिरी बेटे के मौत के बाद तो ऐसे डिप्रेशन में गईं कि लोग कहने लगे कि अब ये नहीं बच पाएंगी.. वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

जिस गाँव में कहा जाता था राजनीति बहुत खराब चीज है और महिलाएं को तो इससे बहुत दूर रहना चाहिए, उसी गाँव की महिला अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही है।

वो महिला, जिन्होंने अपना पहला काउंसिल का चुनाव जीतने के बाद जीत का इतना ईमानदार कारण बताया कि 'वो क्लास में अपना सब्जेक्ट ऐसा पढ़ाती थीं कि बच्चों को उस सब्जेक्ट में किसी दूसरे से ट्यूशन लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी और उनके 70 नम्बर तक आते थे इसीलिए क्षेत्र के सारे लोग और सभी अभिवावक उन्हें बहुत लगाव करते थे'.. वो महिला अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जो अपनी बातों में मासूमियत को जिन्दा रखते हुए अपनी सबसे बड़ी सफलता इस बात को माना कि 'राजनीति में आने के बाद मुझे वो औरतें भी पहचानने लगी जो पहले नहीं पहचानती थी'.. वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जो 2009 में चुनाव हारने के बाद फिर से गाँव में जा कर रहने लगी और जब वापस लौटी तो अपनी आँखों को दान करने की घोषणा की.. वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

वो महिला, जो ये मानती हैं कि 'Life is not bed of roses- जीवन कठिनाइयों के बीच ही रहेगा, हमें ही आगे बढ़ना होगा। कोई push करके कभी हमें आगे नहीं बढ़ा पायेगा'.. वो अब भारत की 'राष्ट्रपति' बनने जा रही हैं।

दशकों–दशक से ठीक कपड़ों और खाने तक से दूर रहने वाले समुदाय को देश के सबसे बड़े 'भवन' तक पहुँचा कर भारत ने विश्व को फिर से दिखा दिया है कि यहाँ रंग, जाति, भाषा, वेष, धर्म, संप्रदाय का कोई भेद नहीं चलता।

जिनके प्रयासों से उनके गाँव से जुड़े अधिकतर गाँवों में आज लड़कियों के स्कूल जाने का प्रतिशत लड़कों से ज्यादा हो गया है, ऐसी द्रौपदी मुर्मू जी का हार्दिक स्वागत है

'राष्ट्रपति भवन' अब वास्तविकता में 'कनक भवन' बन रहा है।

श्री महेश पासवान
सुपुत्र – श्री विजय कुमार पासवान,
वरिष्ठ सचिवालय सहायक,
कर्मचारी चयन आयोग (पूर्वी क्षेत्र)

स्वार्थी जीवन

इस जीवन का अर्थ न समझे,
झूठा प्रेम दिखाता है।

दौलत से है गहरे संबंध,
रिश्ते झूठे निभाता है।

पल पल तोड़े रिश्ते नाते,
यूंही अपनापन दिखाता है।

न खुद खाए, न दे खाने,
सिर्फ खाते भरता जाता है।

इस जीवन का अर्थ न समझे,
झूठा प्रेम दिखाता है।

लालच में बन गया है चोर,
विदेशों में धन जमाता है।

मानव है कि कितना गिर गया,
सब्र न उसको आता है।

न खाते भरते, न भरे घर,
न पेट भरने को आता है।

इस जीवन का अर्थ न समझे,
झूठा प्रेम दिखाता है।

जानबूझकर देखो सिया,
मानव फंस रहा इस काल में।

न कुछ तेरा, न कुछ मेरा,
व्यर्थ कमाए जाता है।

इस जीवन का अर्थ न समझे,
झूठा प्रेम दिखाता है।

***

श्री सिया राम वर्मा
सहा० उप० नि० (मंत्रा०),
कर्मचारी चयन आयोग (पूर्वी क्षेत्र)

''मासूम मुन्नी''

एक थी मुन्नी नन्ही सी
दिमाग से थोड़ी मंद थी
कभी हंसती तो कभी रोती थी
वो पगली बस इठलाती थी।

बचपन गुजरा और आई जवानी
दरिंदों के मुंह में आया पानी
मां बाप को चिंता सताने लगी
जाने क्या करेगी अब ये अभागी।

बदन में यौवन और बुद्धि से शिशुपन
चेहरे में मासूमियत और हरकत से बचपन
कैसा खेल खेला उपरवाले ने
कौन संभाले आंचल, कौन बचा, जीवन।

सभ्य समाज में आई विकार
मासूम मुन्नी बनी हवस का शिकार
रात भर जगती रही अश्रुधारा बहती रही
किसने किया, क्यूं किया पता नहीं।

पापी का पाप नौ महीने में आगे आया
मुन्नी ने एक मासूम को जन्म दिया
मां बाप को सभ्य समाज का डर
किसका मुंह बंद करें और जाएं किधर।

बरसात की रात में मुन्नी के बाप ने
नवजात को फेंक दिया कचरे के ढेर में
झांकती रही मुन्नी खिड़की में
नवजात की चीत्कार गूंजती रही कानों में।

आसमान में बिजली की कड़कड़ाहट पर
मासूम के रोने की आवाज पड़ी भारी
अचानक मुन्नी चीखने लगी
नवजात को देखकर रोने लगी।

मुन्नी भागकर गई कचरे में
और बैठ गई बरसते पानी में
हाथों में लिए नवजात को
चूमने लगी उसके अंग अंग को।

बरसात पर भारी पड़ी
उसकी आंखो से बरसता पानी
द्रवित ममता देख मुन्नी की
आसमान भी हुआ पानी पानी।

एक मासूम ने अबोध को
ममता का बोध करा दिया
मंद बुद्धि की मुन्नी में
मां का प्यार जगा दिया।

डॉ. अशोक कुमार वर्मा
कर्मचारी चयन आयोग, रायपुर

दिनांक–01.09.2022 को कर्मचारी चयन आयोग (मु.) में आयोजित कार्यशाला की कुछ झलकियां

कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली